ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 536-542

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

भारतीय जीवन बीमा निगम के विनियोगों का विश्लेषण

1. करुणानिधि गर्ग, 2. डॉ0 पुष्पेन्द्र सिंह

1. शोध अध्येता, 2. एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, पी.सी. बागला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हाथरस (उ0प्र0) भारत

Received- 05.08.2020,Revised- 09.08.2020, Accepted-13.08.2020 E-mail: - peetaambrask@gmail.com

सारांश : ***IRDA के गठन के बाद निजी बीमा कम्पनियों ने भारत में जीवन बीमा उद्योग में प्रवेश करना शुरू कर दिया। लगभग चार दशकों से, एल.आई.सी. जीवन बीमा क्षेत्र में आभासी एकाधिकार वाली एकमात्र कम्पनी रही है। अब, इस क्षेत्र में इतनी सारी कंपनियों के आने से एलआईसी के प्रदर्शन पर असर पड़ने की संभावना है। इसलिए, शोधकर्ता ने भारतीय जीवन बीमा निगम के वित्तीय प्रदर्शन का अध्ययन करने का निर्णय लिया है। भारतीय जीवन बीमा निगम के वित्तीय प्रदर्शन का मूल्यांकन आय की मात्रा के साथ–साथ निगम के निवेश पैटर्न के आधार पर किया गया है। निम्नलिखित प्रदर्शन उपायों का उपयोग करके विश्लेषण किया गया है।***

कुंजीभूत शब्द– बीमा उद्योग, जीवन बीमा क्षेत्र, आभासी एकाधिकार, वित्तीय प्रदर्शन, मूल्यांकन, निवेश।

निगम की पूँजी– इस उद्देश्य के लिए संसद द्वारा कानून द्वारा किए गए उचित विनियोग के बाद केंद्र सरकार द्वारा प्रदान की गई निगम की मूल पूंजी पांच करोड़ रुपये होगी और ऐसी पूंजी के प्रावधान से संबंधित नियम और शर्तें ऐसी होंगी जो केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित की जा सकती हैं।

तालिका 1: एलआईसी की शेयर पूंजी (राशि सोर में)

Particulars	Nonlinked Business (Crore)	Linked Business	Total Current Year	Total previous Year
Authorised Capital Capital (provided by the Central Government in terms of section 5 of the Life Insurance Corporation Act 1956)	500.00	0.00	500.00	500.00
Total	500.00	0.00	500.00	500.00
Share Capital in India	500.00	0.00	500.00	500.00
Share Capital out of India	500.00	0.00	0.00	0.00

एलआईसी 2009–10 के वार्षिक रेपो से (अनुसूची 5)

कुल आय का विश्लेषण– किसी संगठन की आय उसके वित्तीय प्रदर्शन के मूल्यांकन के लिए महत्वपूर्ण मापदंडों में से एक है। कुल आय में प्रीमियम आय, निवेश से आय और विविध शामिल हैं। प्रीमियम आय को प्रथम वर्ष के प्रीमियम और नवीनीकरण प्रीमियम के साथ–साथ एकल प्रीमियम द्वारा दर्शाया जाता है।

तालिका संख्या:– 2% कुल आय का विश्लेषण

Year	Amount (Rs. In Crores)	% growth over base year	Index
2000-01	53,998.76	-	100
2001-02	72,769.82	34.76	134.76
2002-03	80,938.49	11.23	149.89
2003-04	93,088.00	15.01	172.39
2004-05	1,12,392.74	20.74	208.14
2005-06	1,32,146.88	17.58	244.72
2006-07	1,75,527.08	32.83	325.06
2007-08	2,06,362.98	17.57	382.16
2008-09	2,00,280.65	-2.95	370.90
2009-10	2,98,721.55	49.15	553.20
ACGR		18.66	

एलआईसी ऑफ इंडिया की वार्षिक रिपोर्ट से संकलित

एलआईसी की कुल आय– उपरोक्त तालिका 2 से पता चलता है कि अध्ययन अवधि के दौरान एलआईसी की आय साल दर साल बढ़ रही है। कुल आय रुपये से बढ़ी है। 2000–01 में 53,998.76 करोड़ रु. 2009–10 में 2,98,721.55 करोड़ का मतलब है कि अध्ययन अवधि के दौरान इसमें पांच गुना से अधिक की वृद्धि की गई है।

अध्ययन अवधि के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में प्रतिशत वृद्धि 11% और 49% के बीच रही। वर्ष 2009–10 में उच्चतम विकास दर 49.15% देखी गई है। वर्ष 2008–09 में केवल डाउन रेट –2.95% देखा गया है। 2000–01 में एलआईसी की कुल आय रु. 53,998.76 करोड़ जो बढ़कर रु। 2001–02 में 72,769.82 करोड़, 34.76% की वृद्धि के साथ, रु. 2002–03 में 11.18% के साथ 80,938.49 करोड़, 2003–04 में 15.01% के साथ 93,088.91 करोड़ रुपये, रु. 2004–05 में 20.74% के साथ 1,12,392.74 करोड़, 2005–06 में 17.58% के साथ 1,32,146.88 करोड़ रुपये, 2006–07 में 1,75,527.08 करोड़ रुपये, 2006–07 में 32.83%, 2007 में 2,06,362. 08 17.57% के साथ। 2008–09 में एलआईसी की कुल आय 2,00,280,65 करोड़ रुपए तक –2.95% के साथ घट गई थी और अंत में यह 2005–06 में 49.15% की वृद्धि दर के साथ 2,98,721.55 करोड़ रुपए हो गई।

आय की वार्शिक चक्रवृद्धि वृद्धि दर 18.66% थी जो एक स्वागत योग्य प्रवृत्ति है। दस वर्षों की अध्ययन अवधि के दौरान, यह देखा गया है कि पांच वर्षों के लिए विकास दर वार्षिक चक्रवृद्धि विकास दर से कम थी और चार वर्षों के लिए विकास दर वार्षिक चक्रवृद्धि वृद्धि दर से ऊपर थी।

कुल व्यय राशि का विश्लेषण– एलआईसी

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

द्वारा अपनी आय में से किया गया भुगतान निगम की व्यय राशि का गठन करता है। निगम की कुल व्यय राशि में पॉलिसीधारक को लाभ, प्रबंधकीय खर्च और विशेष रिजर्व में स्थानांतरण शामिल हैं। तालिका 3 अध्ययन अवधि 2000–01 से 2009–10 के दौरान भारतीय जीवन बीमा निगम की कुल व्यय राशि को दर्शाता है।

तालिका संख्याः 3% कुल व्यय राशि का विश्लेषण

Year	Amount (Rs. In Crores)	% growth over base year	Index
2000-01	21,981.45	-	100.00
2001-02	28,283.50	28.67	128.67
2002-03	40,886.08	44.56	186.00
2003-04	44,106.11	7.88	200.65
2004-05	48,507.20	9.98	220.67
2005-06	52,251.51	7.72	237.71
2006-07	77,938.52	49.16	354.56
2007-08	80,176.14	2.87	364.56
2008-09	77,859.47	-2.89	354.20
2009-10	1,08,728.37	39.64	494.64
ACGR		17.34	

एलआईसी ऑफ इंडिया की वार्षिक रिपोर्ट से संकलित ग्राफः 5.2 कुल व्यय राशि।

उपरोक्त तालिका 3 से पता चलता है कि अध्ययन अवधि के दौरान एलआईसी की व्यय राशि साल–दर–साल बढ़ रही है। 2000–01 में 21,981 45 करोड़ रुपए से 2009–10 में 1,08,728.37 करोड़ रुपए हो गया, जिसका अर्थ है कि अध्ययन अवधि के दौरान इसमें 4.9 गुना से अधिक की वृद्धि हुई है।

अध्ययन अवधि के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में प्रतिशत वृद्धि 7% और 49% के बीच रही। वर्ष 2006–07 में उच्चतम विकास दर 49.16ः देखी गई है। वर्ष 2008–09 में सबसे कम विकास दर 2.89% माइनस में देखी गई है। 2000–01 में एलआईसी की कुल व्यय राशि 21981,45 करोड़ रुपये थी जो 2001–02 में 28.67% की वृद्धि के साथ 28283. 50 करोड़ रुपये हो गई, 2002–03 में 44.56ः के साथ 40,886. 08 करोड़ रुपये, 2003 में 44,106.11 करोड़ रुपये– 07.88% के साथ 04, 2004–05 में 09.98% के साथ 48,507.20 करोड़ रुपये, 2005–06 में 07.72% के साथ 52,251.57 करोड़ रुपये, 2006–07 में 77,938.00 करोड़ रुपये के साथ 49.16%, रु. 2007–08 में 2.78% के साथ 80,176.14 करोड़। 2008–09 में –2.89% के साथ एलआईसी का कुल खर्च घटकर 77,849.47 करोड़ रुपये हो गया और 2009–10 में 39.64% की वृद्धि दर के साथ बढ़कर 1,08.728.37 करोड़ रुपये हो गया। कुल व्यय की वार्षिक चक्रवृद्धि वृद्धि दर 17.34% थी जो एक स्वागत योग्य प्रवृत्ति है। दस वर्षों की अवधि के दौरान, यह देखा गया है कि पांच वर्षों के लिए विकास दर वार्षिक चक्रवृद्धि विकास दर से कम थी और चार वर्षों के लिए विकास दर वार्षिक चक्रवृद्धि वृद्धि दर से ऊपर थी।

कुल व्यय राशि का कुल आय से अनुपात–

एलआईसी की वित्तीय स्थिरता का मूल्यांकन करने के लिए, कुल व्यय राशि का कुल आय से अनुपात भी एक महत्वपूर्ण पैरामीटर है। अनुपात दर्शाता है कि कुल आय प्राप्त करने के लिए आय का कितना प्रतिशत खर्च किया गया है। तालिका 4 अध्ययन अवधि 2000–01 से 2009– के दौरान भारतीय जीवन बीमा निगम की कुल आय का कुल व्यय राशि के अनुपात को दर्शाती है–

तालिका संख्याः 5.4% कुल व्यय राशि का कुल आय से अनुपात

Year	TOTAL INCOME Amount (Rs. In Crores)	TOTAL OUTGO Amount (Rs. In Crores)	% of Outgo to income
2000-01	53,998.76	21,981.45	40.71
2001-02	72,759.82	28,283.50	38.87
2002-03	80,938.49	40,886.08	50.52
2003-04	93,088.00	44,106.11	47.38
2004-05	1,12,392.74	48,507.20	43.16
2005-06	1,32,146.88	52,251.51	39.54
2006-07	1,75,527.08	77,938.52	44.40
2007-08	2,06,362.98	80,176.14	38.85
2008-09	2,00,280.65	77,859.47	38.88
2009-10	2,98,721.55	77,859.47	36.40

एलआईसी ऑफ इंडिया की वार्षिक रिपोर्ट से संकलित

कुल आय में कुल व्यय राशि का प्रतिशत 36 प्रतिशत से 51 प्रतिशत के बीच रहा है। कुल आय में व्यय राशि का उच्चतम प्रतिशत वर्ष 2002–03 में 50.52% देखा गया है जबकि कुल आय में व्यय राशि का न्यूनतम प्रतिशत वर्ष 2009–10 में 36.40% देखा गया है। 2000–01 में कुल आय में कुल व्यय राशि का प्रतिशत 40.71% था जो 2001–02 में घटकर 38.87% हो गया। फिर से यह बढ़कर 50.52% 2002–03 हो गया जो अध्ययन अवधि के दौरान कुल आय में कुल व्यय का उच्चतम प्रतिशत देखा गया और 2003–2004, 2004–2005 और 2005–2006 में क्रमशः 47.38%, 43.16%, 39.54% की कमी हुई।

पिछले वर्ष के प्रतिशत की तुलना में 2006–07 में फिर से यह मामूली बढ़कर 44.40% हो गया। फिर 2007–08 में यह घटकर 38.85 प्रतिशत हो गया और फिर घटती प्रवृत्ति दिखाई दी और 2008–09 में यह 38.83% और 2009–10 में 36.40 प्रतिशत तक आ गई जो अध्ययन अवधि के दौरान कुल आय का कुल व्यय राशि का सबसे कम प्रतिशत था। दस वर्षों की अध्ययन अवधि के दौरान, यह देखा गया है कि छह वर्षों के लिए कुल आय में व्यय राशि का प्रतिशत कुल आय से कुल व्यय के औसत प्रतिशत से कम था और चार वर्षों के लिए यह कुल व्यय के औसत प्रतिशत से अधिक था। आय, जैसा कि देखा गया है।

आय की संरचना का विश्लेषण– किसी संगठन

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

की आय उसके प्रदर्शन के मूल्यांकन के लिए एक महत्वपूर्ण मानदंड है। एलआईसी द्वारा हर साल उत्पन्न आय विभिन्न चरों की एक संरचना है। यह विभिन्न क्षेत्रों से और विभिन्न रूपों में आता है। प्रत्येक वर्ष में कुल आय में प्रत्येक चर या श्रेणी के योगदान का आकलन करने के लिए एलआईसी की कुल आय का विभिन्न श्रेणियों में विश्लेषण किया जा सकता है। इस प्रकार, इस उद्देश्य के लिए कुल आय में इन चरों के सटीक योगदान को जानने के लिए प्रत्येक चर के प्रतिशत की गणना की गई है। एलआईसी की आय के मुख्य घटक प्रथम वर्ष का प्रीमियम, नवीनीकरण प्रीमियम, एकल प्रीमियम और वार्षिकी के लिए प्रतिफल, निवेश से आय और विविध या अन्य प्राप्तियां हैं।

तालिका 5 2000–01 से 2009–10 तक की अध्ययन अवधि के लिए प्रतिशत में आय का विश्लेषण दिखाते हैं।

तालिका–5: आय की संरचना का विश्लेषण (प्रतिशत में आय)

Year	First Year Premium	Renewal Premium	Single Premium & Consideration for Annuity	Income From Investment	Miscellaneous Income	Total
2000-01	12.44	45.96	4.99	34.59	0.02	100%
2001-02	14.11	40.74	12.43	31.19	1.53	100%
2002-03	13.87	47.73	4.86	30.93	2.61	100%
2003-04	12.11	50.30	6.60	28.23	2.76	100%
2004-05	10.21	49.55	5.41	31.43	3.40	100%
2005-06	11.39	50.61	1.20	31.55	5.25	100%
2006-07	12.11	48.52	2.63	32.26	4.48	100%
2007-08	13.61	46.82	3.19	30.69	5.69	100%
2008-09	12.36	47.31	4.31	30.04	5.98	100%
2009-10	13.25	46.07	3.31	30.67	4.70	100%

एलआईसी ऑफ इंडिया की वार्षिक रिपोर्ट से संकलित

आय की संरचना– तालिका 6 अध्ययन की अवधि में एलआईसी की कुल आय में प्रत्येक घटक का प्रतिशत हिस्सा दिखाते हैं। आय का बड़ा प्रतिशत हर साल नवीनीकरण प्रीमियम से आता है। आय का दूसरा सबसे बड़ा प्रतिशत निवेश से आता है, फिर प्रथम वर्ष के प्रीमियम के बाद एकल प्रीमियम और वार्षिकी के लिए विचार और आय का सबसे छोटा प्रतिशत विविध आय से आता है। कुल आय में प्रथम वर्ष की प्रीमियम आय का प्रतिशत हिस्सा अध्ययन की अवधि में कुल आय का 10% और 15% के बीच है। 2001–02 में प्रथम वर्ष के प्रीमियम का उच्चतम प्रतिशत हिस्सा 14.11% था और 2004–05 में प्रथम वर्ष के प्रीमियम का न्यूनतम प्रतिशत हिस्सा 10.21% था। नवीकरण प्रीमियम के प्रतिशत हिस्से के मामले में, नवीकरण प्रीमियम आय का प्रतिशत हिस्सा अध्ययन की अवधि में कुल आय का 40% और 51% के बीच है। 2005–06 में नवीकरण प्रीमियम का उच्चतम प्रतिशत हिस्सा 50.61% था और 2001–02 में नवीकरण प्रीमियम का न्यूनतम प्रतिशत हिस्सा 40.74% था।

एकल प्रीमियम के प्रतिशत हिस्से और वार्षिकी के लिए प्रतिफल के मामले में, प्रतिशत हिस्सा टाई अध्ययन की अवधि में कुल आय का 1% और 13% के बीच होता है, एक वर्ष यानी 2001–02 को छोड़कर जब इस घटक का योगदान उच्चतम 12.43 था। कुल आय का:। 2001–02 में एकल प्रीमियम और वार्षिकी के लिए प्रतिफल का उच्चतम प्रतिशत हिस्सा 12.43% था और 2005–06 में वार्षिकी के लिए एकल प्रीमियम और प्रतिफल का न्यूनतम प्रतिशत हिस्सा 1.20% था।

निवेश से आय के प्रतिशत हिस्से के मामले में, प्रतिशत हिस्सा अध्ययन की अवधि में कुल आय का 28% से 35: के बीच है। 2000–01 में निवेश से आय का उच्चतम प्रतिशत हिस्सा 34.59% था और निवेश से आय का सबसे कम प्रतिशत हिस्सा 2003–04 में 28.23% था। कुछ विविध आय भी हैं जो कुल आय में 1.0% और 6.0% के बीच बहुत कम प्रतिशत में योगदान करती हैं। 2008–2009 में उच्चतम प्रतिशत हिस्सा 5.98% था और 2001–02 में सबसे कम प्रतिशत हिस्सा 1.53% था।

आय के उपयोग का विश्लेषण एलआईसी द्वारा आय विभिन्न विभिन्न स्रोतों जैसे प्रीमियम आय– प्रथम वर्ष प्रीमियम, नवीनीकरण प्रीमियम और एकल प्रीमियम, निवेश से आय आदि से उत्पन्न होती है।

एक वर्ष के दौरान उत्पन्न आय का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जाना है। निगम के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए आय के उपयोग का विश्लेषण किया जाना है। कुल आय में प्रत्येक गतिविधि के हिस्से का विश्लेषण करने के लिए विभिन्न गतिविधियों में आय के उपयोग के प्रतिशत की गणना की जाती है।

आय का उपयोग एलआईसी की दस बुनियादी गतिविधियों के लिए किया जाता है और प्रत्येक की आय का अपना हिस्सा होता है। विभिन्न गतिविधियाँ विभिन्न भुगतान करने के रूप में होती हैं, जैसे कि परिपक्वता और मृत्यु भुगतान दोनों के दावों का भुगतान, एजेंटों को कमीशन, कर्मचारियों को वेतन, प्रबंधन व्यय, कर, भंडार में स्थानांतरण आदि।

व्यय से अधिक आय को जोड़ा गया जीवन बीमा कोष जिसे आय के उपयोग के रूप में भी माना जाता है। तालिका 5.6 विभिन्न घटकों का प्रतिशत दर्शाती है जिसमें 2000–01 से 2009–10 तक की अध्ययन अवधि के दौरान एलआईसी की कुल आय का हर साल उपयोग किया जाता है।

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

तालिका संख्याः 6 आय के उपयोग का विश्लेषण (प्रतिशत में)

Year	Claims By Maturity	Claim By Death	Surrender.	Annuity
	(%)	(%)	(%)	(%)
2000-01	18.08	3.54	3.16	1.20
2001-02	16.79	2.95	3.15	1.38
2002-03	17.84	3.14	3.17	1.48
2003-04	17.82	3.15	3.37	1.51
2004-05	18.11	2.94	2.96	1.47
2005-06	18.72	2.85	2.83	1.50
2006-07	18.40	2.55	9.15	1.26
2007-08	15.48	2.54	8.73	1.16
2008-09	15.99	2.74	4.48	1.29
2009-10	17.92	2.69	8.56	1.44

एलआईसी ऑफ इंडिया की वार्षिक रिपोर्ट से संकलित

तालिका 6 वर्ष 2000–01 से 2009–10 तक की अध्ययन अवधि के लिए एलआईसी द्वारा वर्ष के दौरान कुल आय के उपयोग को दर्शाती है। मूल रूप से आय का उपयोग चार श्रेणियों में किया गया है– पॉलिसीधारक को भुगतान, प्रबंधन के खर्च, अन्य व्यय राशि और मूल्यांकन अधिशेष का सरकारी हिस्सा। चार श्रेणियों में सभी समायोजन करने के बाद, शेष आय राशि को व्यय राशि से अधिक आय कहा जाता है जो जीवन बीमा निधि में स्थानांतरित हो जाती है। पॉलिसीधारक को पहली श्रेणी–भुगतान में, एलआईसी द्वारा चार प्रकार के भुगतान किए जाते हैं अर्थात परिपक्वता के दावे, मृत्यु द्वारा दावे और समर्पण। परिपक्वता द्वारा किए गए दावों के मामले में, जिसके लिए अध्ययन अवधि के दौरान कुल आय का 16ः से 19ः उपयोग किया गया था। 2000–01 में परिपक्वता के दावों का प्रतिशत हिस्सा कुल आय का 18.08% था, जो 2001–02, 2002–03 और 2003–04 में क्रमशः 16.79%, 17.84% और 17.82% हो गया। 2004–05 और 2005–06 में यह बढ़कर 18.11% और 18,72% हो गया। फिर 2006–07 में यह गिरकर 18.40% हो गया। उसके बाद 2007–08 में क्रमशः 15.48%, 2008–09 में 15.99% और 2009–10 में यह बढ़कर 17.92% हो गई।

कुल आय में दावों का उच्चतम प्रतिशत हिस्सा 2005–06 में 18.72% था और सबसे कम प्रतिशत हिस्सा 2007–08 में 15.48% था।

दस वर्षों की अध्ययन अवधि के दौरान यह देखा गया है कि तीन वर्षों के लिए आय में परिपक्वता के दावों का प्रतिशत हिस्सा औसत प्रतिशत से कम था और सात वर्षों के लिए यह औसत प्रतिशत से ऊपर था। मृत्यु द्वारा किए गए दावों के मामले में, जिसके लिए अध्ययन अवधि के दौरान कुल आय का 2% से 4% उपयोग किया गया था। 2000–01 में मृत्यु के दावों का प्रतिशत हिस्सा कुल आय का 3.54ः था जो 2001–02 में घटकर 2.95ः हो गया और 2002–03 में 3.14% और 2003–04 में 3.15% हो गया। फिर 2004–05, 2005–06, 2006–07 और 2007–08 में यह घटकर क्रमशः 2.94%, 2.85%, 2.55% और 2.54% हो गई। 2008–09 में फिर से यह बढ़कर 2.74% हो गया और अंत में 2009–10 में यह घटकर 2.69% हो गया। कुल आय में मृत्यु के दावों का उच्चतम प्रतिशत हिस्सा 2000–01 में 3.54% था और सबसे कम प्रतिशत हिस्सा 2007–08 में 2.54% था।

दस वर्षों की अध्ययन अवधि के दौरान यह देखा गया है कि पांच वर्षों के लिए आय में मृत्यु के दावों का प्रतिशत हिस्सा औसत प्रतिशत से कम था और पांच वर्षों के लिए यह औसत प्रतिशत से ऊपर था। अभ्यर्पण द्वारा किए गए दावों के मामले में, जिसके लिए अध्ययन अवधि के दौरान कुल आय का 2% से 10% उपयोग किया गया था। 2000–01 में समर्पण द्वारा किए गए दावों का प्रतिशत हिस्सा कुल आय का 3.16% था, जो 2001–02 में घटकर 3.15% हो गया और फिर 2002–03 और 2003–04 में यह बढ़कर क्रमशः 3.17% और 3.37% हो गया। 2004–05 और 2005–06 में समर्पण द्वारा दावा घटकर 2.96% और 2.83% हो गया। यह 2006–07 में फिर से बढ़कर 9.15% हो गया और 2007–08 और 2008–09 में यह घटकर 8.73% और 4.48% हो गया और अंत में यह 8.56ः की वृद्धि दर के साथ 2009–10 में बढ़ गया।

कुल आय में समर्पण द्वारा किए गए दावों का उच्चतम प्रतिशत हिस्सा 2006–07 में 9.15% था और 2005–06 में सबसे कम प्रतिशत हिस्सा 2.83% था। दस वर्षों की अध्ययन अवधि के दौरान यह देखा गया है कि सात वर्षों के लिए आय में समर्पण द्वारा किए गए दावों का प्रतिशत हिस्सा औसत प्रतिशत से कम था और तीन वर्षों के लिए यह औसत प्रतिशत से ऊपर था।

वार्षिकी के मामले में जिसके लिए अध्ययन अवधि के दौरान कुल आय का 1% से 2ः उपयोग किया गया था। 2000–01 में वार्षिकी का प्रतिशत हिस्सा कुल आय का 1.20% था जो 2001–02, 2002–03 और 2003–04 में क्रमशः 1.38%, 1.48ः और 1.51% तक बढ़ गया। 2004–05 और 2005–06 में वार्षिकी का प्रतिशत हिस्सा क्रमशः 1.52% और 1.63% था। कुल आय में वार्षिकी का उच्चतम प्रतिशत हिस्सा 2003–04 में 1.51% था और 2007–08 में सबसे कम प्रतिशत हिस्सा 1.16% था। दस वर्षों की अध्ययन अवधि के दौरान यह देखा गया है कि चार वर्षों के लिए आय में वार्षिकी का प्रतिशत हिस्सा औसत प्रतिशत से कम था और छह वर्षों के लिए यह औसत प्रतिशत से ऊपर था।

दूसरी श्रेणी में– प्रबंधन के खर्च, एलआईसी द्वारा किए गए तीन प्रकार के खर्च हैं यानी एजेंटों को

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

कमीशन, कर्मचारियों को वेतन और अन्य लाभ और अन्य प्रबंधन खर्च।

तालिका संख्याः 5.7% आय के उपयोग का विष्लेशण

Year	Comm.	salary Etc	Other mgt Exp.	Other Outgo	Govt. Share of Val Surplus	Excess of Income over Outgo Added to Life fune
	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)
2000-01	6.03	5.18	1.39	1.57	0.59	52.26
2001-02	6.31	4.35	1.26	1.56	1.12	61.13
2002-03	6.18	4.09	1.56	12.39	0.60	49.55
2003-04	6.14	3.17	1.84	2.44	0.59	56.06
2004-05	5.56	3.07	2.26	6.18	0.62	53.54
2005-06	5.37	2.72	1.85	3.23	0.47	52.42
2006-07	5.26	2.34	1.72	2.95	0.43	42.39
2007-08	4.64	2.45	1.58	1.86	0.40	42.00
2008-09	4.62	2.66	1.51	2.10	0.43	49.60
2009-10	4.63	3.08	1.60	1.23	0.39	44.79

एलआईसी ऑफ इंडिया की वार्षिक रिपोर्ट से संकलित

एजेंटों को कमीशन के मामले में, अध्ययन अवधि के दौरान कुल आय का 4% से 7% उपयोग किया गया था। 2000–01 में, एजेंटों को कमीशन का प्रतिशत हिस्सा कुल आय का 6.03% था, जो 2001–02 में बढ़कर 6.31% हो गया और घटकर 6.18%, 6.14%, 5.56%, 5.37%,5.26%, 4.64% हो गया। 2002–03, 2003–04, 2004–05, 2005–06, 2006–07, 2007–08 और 2008–09 में क्रमशः 4.625। फिर 2009–10 में यह थोड़ा बढ़कर 4.63 हो गया। कुल आय में एजेंटों को कमीशन का उच्चतम प्रतिशत हिस्सा 2001–02 में 6.31% था और 2008–09 में सबसे कम प्रतिशत हिस्सा 4.62% था। दस वर्षों की अध्ययन अवधि के दौरान यह देखा गया है कि पांच वर्षों के लिए आय में एजेंटों को कमीशन का प्रतिशत हिस्सा औसत प्रतिशत से कम था और पांच वर्षों के लिए यह औसत प्रतिशत से ऊपर था। कर्मचारियों को वेतन और अन्य लाभों के मामले में, अध्ययन अवधि के दौरान कुल आय का 2ः से 6ः उपयोग किया गया था। 2000–01 में, कर्मचारियों को वेतन और अन्य लाभों का प्रतिशत हिस्सा कुल आय का 5.18ः था, जो घटती प्रवृत्ति को दर्शाता है और यह घटकर 4.35%, 4.09%, 3.17%, 3.07%, 2.72% और 2.34% हो गया। 2001–02, 2002–03, 2003–04, 2004–05, 2005–06 और 2006–07 क्रमशः। 2007–08, 2008–09 और 2009–10 में फिर से यह बढ़कर क्रमशः 2.45%, 2,66% और 3.08% हो गया। कुल आय में कर्मचारियों को वेतन और अन्य लाभों का उच्चतम प्रतिशत हिस्सा 2000–01 में 5.18% था और 2006–07 में सबसे कम प्रतिशत हिस्सा 2.34% था। दस वर्षों की अध्ययन अवधि के दौरान यह देखा गया है कि सात वर्षों के लिए आय में कर्मचारियों को वेतन और अन्य लाभों का प्रतिशत हिस्सा औसत प्रतिशत से कम था और तीन वर्षों के लिए यह औसत प्रतिशत से ऊपर था। अन्य प्रबंधन व्यय के मामले में, अध्ययन अवधि के दौरान कुल आय का 1% से 3% उपयोग किया गया था।

2000–01 में, अन्य प्रबंधन खर्चों का प्रतिशत हिस्सा कुल आय का 1.39% था, जो 2001–02 में घटकर 1.26% हो गया। फिर 2002–03, 2003–04, 2004–05 में यह बढ़कर क्रमशः 1.56%, 1,84% और 2.26% हो गया। इसके बाद यह 2005–06, 2006–07, 2007–08 और 2008–09 में क्रमशः 1.85%, 1.72%, 1,58ः और 1.51% हो गया। 2009–10 में यह फिर से बढ़कर कुल आय का 1.60% हो गया। कुल आय में अन्य प्रबंधन व्यय का उच्चतम प्रतिशत हिस्सा 2004–05 में 2.26% था और 2001–02 में सबसे कम प्रतिशत हिस्सा 1.26% था। दस वर्षों की अध्ययन अवधि के दौरान यह देखा गया है कि सात वर्षों के लिए आय में अन्य प्रबंधन व्यय का प्रतिशत हिस्सा औसत प्रतिशत से कम था और तीन वर्षों के लिए यह औसत प्रतिशत से ऊपर था।

तीसरी श्रेणी के मामले में– अन्य व्यय राशि, जिसमें एलआईसी द्वारा हर साल करों का भुगतान और रिजर्व में ट्रांसफर किया जाता है। वर्ष 2002–03 को छोड़कर लगभग हर साल कुल आय का 1.00% से 4% उपयोग किया गया था, जब यह असाधारण रूप से अधिक था यानी 12.39%। यह एलआईसी द्वारा सॉल्वेंसी मार्जिन के रखरखाव के संबंध में आईआरडीए द्वारा उपयोग किए गए नए मानदंडों के कारण था। इसलिए एलआईसी को अपने संसाधनों को 10,000 करोड़ से अधिक तक बढ़ाना होगा। 2000–01 में कुल आय में अन्य व्यय का प्रतिशत हिस्सा 1.57% था जो 2001–02 में घटकर 1.56% हो गया और फिर 2003–04 और 2004–05 में यह बढ़कर 2.44% और 6.18% हो गया। फिर यह 2005–06, 2006–07 और 2007–08 में क्रमशः 3.23%, 2.95ः और 1.86% तक कम हो गया। 2008–09 में फिर से यह बढ़कर 2.10% हो गया। फिर 2009–10 में यह घटकर 1.23% हो गया।

कुल आय में अन्य व्यय राशि का उच्चतम प्रतिशत हिस्सा 2002–03 में 12.39% था और 2009–10 में सबसे कम प्रतिशत हिस्सा 1.23% था। दस वर्षों की अध्ययन अवधि के दौरान यह देखा गया है कि आठ वर्षों के लिए आय में अन्य व्यय का प्रतिशत हिस्सा औसत प्रतिशत से कम था और दो वर्षों के लिए यह औसत प्रतिशत से ऊपर था। निगम की कुल आय में से कुछ प्रतिशत भी मूल्यांकन अधिशेष के सरकारी हिस्से के रूप में हर साल केंद्र सरकार को जाता है। इस संबंध में प्रतिशत 0.5% और 2.0% के बीच भिन्न होता है। 2000–01 में मूल्यांकन अधिशेष के सरकारी हिस्से का प्रतिशत हिस्सा कुल आय में 0.59% था, जो बढ़कर 1.12% हो गया और 2002–03 और 2003–04 में यह घटकर 0.60% और 0.59% हो गया और फिर से यह बढ़कर 0.62% हो गया। 2004–05 में %। फिर 2005–06, 2006–07 और 2007–08

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

में यह घटकर 0.47%, 0.43% और 0.40% हो गया। 2008–09 में फिर से यह बढ़कर 0.43% हो गया और अंत में 2009–10 में घटकर 0.39% हो गया। कुल आय में सरकारी हिस्सेदारी का उच्चतम प्रतिशत 2001–02 में 1.12% था और सबसे कम प्रतिशत हिस्सा 2009–10 में 0.39% था। अध्ययन अवधि के दौरान अक्सर यह देखा गया है कि आठ वर्षों के लिए आय में मूल्यांकन अधिशेष के सरकारी हिस्से का प्रतिशत औसत प्रतिशत से कम था और दो वर्षों के लिए यह औसत प्रतिशत से ऊपर था।

सभी भुगतान करने के बाद, शेष आय या व्यय राशि से अधिक आय को जीवन बीमा कोष में जोड़ दिया जाता है। हर साल कुल आय का अधिकतम हिस्सा इसी फंड में जाता है। 2000–01 में व्यय राशि से अधिक आय का प्रतिशत हिस्सा 59.26% था जो 2001–02 में बढ़कर 61.13% हो गया और 2002–03 में यह गिरकर 49.55% हो गया क्योंकि इस वर्ष आय का 12.39% करों के लिए इस्तेमाल किया गया था और एलआईसी द्वारा सॉल्वेंसी मार्जिन के रखरखाव के संबंध में आईआरडीए द्वारा जारी किए गए नए मानदंडों के कारण रिजर्व। 2003–04 और 2004–05 में फिर से यह बढ़कर क्रमशः 56.06% और 53.54% हो गया। फिर 2005–06, 2006–07 और 2007–08 में यह घटकर 52.42%, 42.39% और 42.00% हो गया। 2008–09 में फिर से यह थोड़ा बढ़कर 49.60% हो गया। फिर 2009–10 में यह गिरकर 44.79% पर आ गया। कुल आय में व्यय से अधिक आय का उच्चतम प्रतिशत हिस्सा 2001–02 में 61.13% था और सबसे कम प्रतिशत हिस्सा 2007–08 में 42.0% था।

जीवन बीमा कोष और कुल संपत्ति का विश्लेषण– उदाहरण के लिए, 1954 में, एलआईसी की कुल जीवन निधि रु0 277.8 करोड़ जो 2009–10 में बढ़कर 9,99,517.59 हो गया, जबकि सामान्य भंडार, आरक्षित निधि और निवेश में उतार–चढ़ाव निधि, आदि, (यॅानि, जीवन निधि के अलावा अन्य सभी प्रावधान) कुल मिलाकर केवल रु। 23.2 करोड़ जो 2009–10 में थोड़ा बढ़कर 23083.64 हो गया। वित्तीय दृष्टि से, जीवन निधि की तुलना में जीवन निधि के अलावा अन्य धन बहुत महत्वपूर्ण नहीं हैंय न ही वे बीमा वित्त की विशिष्ट समस्याओं को जन्म देते हैं। इसलिए, हमें भारत में जीवन बीमा निगम के अपने अध्ययन में जीवन बीमा कोष पर ध्यान देना चाहिए।

जीवन बीमा कोष का विश्लेषण– जीवन बीमा कोष व्यय राशि से अधिक आय है। यह निगम द्वारा बनाया गया एक कोष है। जीवन बीमा व्यवसाय में से इस निधि की राशि का उपयोग एलआईसी द्वारा निवेश करने और ऋण प्रदान करने के लिए किया जाता है। सभी प्रकार के भुगतान, व्यय, कर, सरकार के अधिशेष के हिस्से आदि को करने के बाद इस फंड का रखरखाव किया जाता है। एलआईसी के वित्तीय प्रदर्शन का विश्लेषण करने के लिए जीवन बीमा कोष का मूल्यांकन भी महत्वपूर्ण तथ्य है। तालिका 8 और जीवन बीमा कोष की राशि और 2000–01 से 2009–10 की अध्ययन अवधि के लिए पिछले वर्ष की तुलना में प्रतिशत वृद्धि को दर्शाता है।

तालिका 8% जीवन बीमा कोष का विश्लेषण (करोड़ में)

Year	Life Fund	% growth over base year	Index
2000-01	1,86,024.75		100.00
2001-02	2,27,008.98	22.03	122.03
2002-03	2,81,664.33	24.08	151.41
2003-04	3,21,759.55	14.24	172.97
2004-05	3,85,791.21	19.90	207.39
2005-06	4,63,147.62	20.05	248.97
2006-07	5,60,806.33	21.09	301.47
2007-08	6,86,616.45	22.43	369.10
2008-09	8,09,524.91	17.90	435.17
2009-10	9,99,517.59	23.47	435.17
ACGR		18.31	537.30

एलआईसी ऑफ इंडिया की वार्षिक रिपोर्ट से संकलित

उपरोक्त तालिका 8 से पता चलता है कि अध्ययन अवधि के दौरान जीवन बीमा कोष साल दर साल बढ़ रहा है। तालिका से देखा जा सकता है कि जीवन बीमा कोष 2000–01 में 186024.75 करोड़ रुपये से बढ़कर 2009–10 में 999517,59 करोड़ रुपये हो गया है अर्थात अध्ययन अवधि के दौरान इसमें पांच गुना से अधिक की वृद्धि की गई है। अध्ययन अवधि के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में प्रतिशत वृद्धि 14% से 24% के बीच रही। वर्ष 2002–03 में उच्चतम विकास दर 24.08% देखी गई है। सबसे कम विकास दर वर्ष 2003–04 में 14.24 प्रतिशत देखी गई है। 2000–01 में एलआईसी का कुल जीवन बीमा कोष रु. 1,86,024.75 करोड़ जो बढ़कर रु। 2001–02 में 2,27,008.98 करोड़, पिछले वर्ष की तुलना में 22.03% की वृद्धि के साथ, रु. 2002–03 में 2,81,664.33 करोड़ रुपए 24.08% के साथ, रु. 2003–04 में 14.24% के साथ 3,21,759.55 करोड़ रु. 2004–05 में 3,85,791.21 करोड़ रुपए, 19.90% के साथ, 2005–06 में 4,63,147.62 करोड़ रुपए के साथ 20.05%, रु. 2006–07 में 21.09ः के साथ 5,60,806.33 करोड़ रु. 2007–08 में 22.43% के साथ 6,86,616. 45 करोड़ रु. 2008–09 में 17.90% के साथ 8,09,524.91 करोड़ और अंत में यह बढ़कर रु। 2009–10 में 23.47% की वृद्धि दर के साथ 9,99,517.59 करोड़।

जीवन बीमा कोष की वार्षिक चक्रवृद्धि वृद्धि दर 18. 31% थी जो एक स्वागत योग्य प्रवृत्ति है। दस वर्षों की

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

अध्ययन अवधि के दौरान, यह देखा गया है कि दो वर्षों के लिए विकास दर वार्षिक चक्रवृद्धि वृद्धि दर से कम थी और सात वर्षों के लिए विकास दर वार्षिक चक्रवृद्धि वृद्धि दर से ऊपर थी।

एलआईसी की कुल संपत्ति का विश्लेषण– तालिका 9 और एल आई सी की अध्ययन अवधि में कुल सम्पत्ति की राशि व पिछले वर्षों से प्रतिशत वृद्धि को दर्शाती है।

तालिका 9% एलआईसी की कुल संपत्ति का विश्लेषण (करोड़ रुपये में)

Year	Assets on 31st March (Rs. in crore)	% growth over base year	Index
2000-01	1,92,514.65		100.00
2001-02	2,45,331.46	27.44	127.44
2002-03	2,90,539.97	18.43	150.92
2003-04	3,67,359.84	26.44	190.82
2004-05	4,38,079.22	19.25	227.56
2005-06	5,52,447.33	26.11	286.96
2006-07	6,51,883.00	18.00	338.61
2007-08	8,03,820.00	23.31	417.54
2008-09	8,73,551.35	08.67	453.76
2009-10	11,52,057.21	31.88	598.43
ACGR		19.59	

एलआईसी ऑफ इंडिया की वार्षिक रिपोर्ट से संकलित

उपरोक्त तालिका 5.9 और ग्राफ 5.5 से पता चलता है कि अध्ययन अवधि के दौरान एलआईसी की कुल संपत्ति साल दर साल बढ़ रही है। तालिका से यह देखा गया है कि कुल संपत्ति रुपये से बढ़ गई है। 2000–01 में 1,92,514.65 करोड़ रुपये से 2009–10 में 11,52,057.21 करोड़ रुपये हो गया। अध्ययन अवधि के दौरान संपत्ति में छह गुना से अधिक की वृद्धि हुई है। अध्ययन अवधि के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में प्रतिशत वृद्धि 18% से 32% के बीच रही। वर्ष 2009–10 में उच्चतम विकास दर 31.88% देखी गई है। वर्ष 2006–07 में सबसे कम विकास दर 18.00% देखी गई है। 2000–01 में एलआईसी की कुल संपत्ति रु. 1,92,514.65 करोड़ जो बढ़कर रु। 27.44% विकास दर के साथ 2001–02 में 2,45,331.46 करोड़ रु. 2002–03 में 2,90,539.97 करोड़, 18.43% के साथ, रु. 2003–04 में 26.44% के साथ 3,67,359.84 करोड़ रु. 2004–05 में 4,38,079.22 करोड़ 19.25% के साथ, रु। 2005–06 में 26.11% के साथ 5,52,447.33 करोड़ रु. 2006–07 में 18.00% के साथ 6,51,883.00 करोड़ रु. 2007–08 में 23.31% के साथ 8,03,820.00 करोड़ रु. 2008–09 में 08.67% के साथ 8,73,551.35 करोड़ और अंत में यह बढ़कर रु. 2009–10 में 31.88% की वृद्धि दर के साथ 11,52,057.21 करोड़ रुपये। कुल संपत्ति की वार्षिक चक्रवृद्धि वृद्धि दर 19.59% थी जो एक स्वागत योग्य प्रवृत्ति है। दस वर्षों की अध्ययन अवधि के दौरान, यह देखा गया है कि चार वर्षों के लिए विकास दर वार्षिक चक्रवृद्धि वृद्धि दर से कम थी और पांच वर्षों के लिए विकास दर वार्षिक चक्रवृद्धि वृद्धि दर से ऊपर थी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बीमा के सिद्धान्त, डॉ0 आर के विश्नोई, सत्र 2007 साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0) लि0।
2. विश्नोई, डा0 राधाकृष्ण, बीमा के सिद्धान्त, सत्र 2009, एस0बी0पी0डी0 पब्लिशिंग हाउस।
3. विश्नोई, डा0 राधाकृष्ण, बीमा के सिद्धान्त, सत्र 2010, एस0बी0 पी0डी0 पब्लिशिंग हाउस।
4. कौर, बबा सुमिन्दर, सत्र 2008, लाइफ इन्श्योरेन्स कार्पोरेशन आफ इण्डिया, इम्पैकट ऑफ प्राइवेटाइजेशन एण्ड परफारमेंस, रिमाल पब्लिकेशन नई दिल्ली।
5. चौधरी, संतोश, एवम् के0 एण्ड किशोर जी कुलकर्णी, सत्र 1991, रोल ऑफ द लाइफ इन्श्योरेन्स कार्पोरेशन इन इकोनामिक डेवलपमेन्ट, हिमालया पब्लिसिंग हाउस मुम्बई।
6. बाजपेई, ओ0 पी0, लाइफ इन्श्योरेंस फाइनेंस इन इण्डिया, विश्वविधालय प्रकाशन, वाराणसी।
7. गुप्ता, ओ0 एस0, सत्र 1966, लाइफ इन्श्योरेन्स–स्पेशल रिफ्रेन्स टु इण्डिया, फ्रेस बोस एण्ड कम्पनी देलही।
8. अग्रवाल, ए0 एन0, इन्श्योरेन्स इन इण्डिया, सत्र 1960, इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद ।
9. ट्वाय, प्रसून कुमार, ''लाइफ इन्श्योरेन्स एट ए गलांस'' द इन्श्योरेन्स टाइम्स, कलकत्ता।

*****